२१: प्रतिपादन-३ : सहअस्तित्व

दिनांक -१५/१०/२०११

सह-अस्तित्व में जड़-चैतन्य प्रकृति का होना देखा गया है | सह-अस्तित्व का मतलब सत्तामयता में सम्पृक्त प्रकृति से है | सत्तामयता का मतलब सर्देश, काल में एक सा विद्यमानता से है | साथ में पारदर्शी, पारगामी रूप में होना पाया जाता है | यह अध्ययनगम्य है | इस क्रम में सह-अस्तित्व स्पष्ट होता है | यह व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण जड़, चैतन्य वस्तुएँ नित्यवर्तमानता से है | इसी आधार पर यह पता लगता है कि जड़-चैतन्य प्रकृति सह-अस्तित्व में प्रकटित है | प्रकटित का मतलब होने, रहने से है | अध्ययन जो कुछ भी है, होने- रहने के अर्थ में ही है | होना सह-अस्तित्व विधि से समझ में आता है, रहना क्रियाशीलता के अर्थ में समझ में आता है | प्रकृति सहज जड़ एवं चैतन्य भी अपने अपने कार्यों से पहचाने जाते हैं | जड़, चैतन्य का कार्य निश्चित है | जड़ प्रकृति में भौतिक, रासायनिक वस्तुएं गण्य हैं | रासायनिक वस्तुएं निश्चित कार्य करता हुआ स्पष्ट है | जैसा अम्ल सर्वदेश काल में एक सा काम करता है, क्षार एक सा काम करता है | पुष्टि तत्व, रचना तत्व अपना अपना कार्य करतें हैं | यह सर्वदेश काल में एक सा कार्य करता हुआ दिखता है | प्राणावस्था का सम्पूर्ण वस्तुएं अपना अपना कार्य करता हुआ देखने को मिलता है | जैसा वट वृक्ष, बीजानुषंगी विधि से अपना कार्य को सर्वदेश,काल में एक सा करता हुआ देखने को मिलता है |

उक्त क्रम में जीवावस्था में सभी जीव वंशानुषंगी सिद्धांत के आधार पर जीता हुआ, मरता हुआ देखने को मिलता है | गाय का बच्चा गाय के अनुसार ही आचरण करने में समर्थ होता है | बकरी का बच्चा बकरी के अनुसार कार्य करने में समर्थ होता है | भेड़ का बच्चा भेड़ के अनुसार आचरण करने में समर्थ होता है | इस प्रकार वंशानुषंगी विधि से जन्म से ही कार्य करता हुआ दिखता है | किसी आयु तक परम्परानुसार सारा कार्य करते हैं | इसमें देश काल का परिवर्तन का कोई अंतर प्रभावी नहीं होता है | बन्दर का बच्चा बन्दर ही बनता है |

हर मानव का संतान मानव होना देखने को मिलता है | हर मानव संतान अलग अलग सोचता है | मनुष्य में सोचने का तरीका समाया रहता है | जीवों में सोचने का तरीका वंश के अनुसार ही है | मनुष्य सोचने के आधार पर विभिन्न तरीके से कार्य करता है | ये सब को प्रयोग माना गया है | मानव अपने पेट भरने के लिये सुविधा- संग्रह के लिये जो कुछ करता है, उसे उचित माना गया है | यह आज मानव परम्परा का मूल्यांकन है | इस प्रकार मानव परम्परा का अध्ययन आदर्शवादी विधि से तथा भौतिकवादी विधि से सम्पन्न हुआ | आदर्शवादी वांगमय को देखने पर मानव का अध्ययन नहीं हुआ, पता लगता है | भौतिकवादी विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया; क्योंकि भौतिकवादी विधि से मानव को सुविधा- संग्रह में प्रवृत्त होने के लिये अवसर उपलब्ध हुआ | जबकि आदर्शवादी विधि से ईश्वरीय महिमा के आधार पर अर्थात ईश्वर ही सब कुछ करता है, भोगता है के आधार पर विधि तथा निषेध को बताया गया है जिसमें स्वर्ग नर्क की कल्पना समा गयी है | इस प्रकार भय,प्रलोभन के आधार पर बात किया है |

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के आधार पर मानव को पञ्च मानव कोटि में पहचाना है | जीव चेतना विधि से दो प्रकार के मानव हैं | इन्हें पशु मानव, राक्षस मानव के रूप में पहचाना है | इन्हीं में सभी अपराधों को वैध

मानने की प्रवृत्तियां देखा गया जैसे पर धन, पर नारी/पर पुरुष, पर पीड़ा के रूप में प्रवृत्तियों को, भाषा को, कार्य को, फल परिणाम को वैध माना गया है | अवैध मानने का विधि सह-अस्तित्व ही रहा है | इस क्रम में जीव चेतना विधि से जो कुछ भी सोच, विचार, फल-परिणाम हुआ, अवैध ही रहा | दूसरी प्रकार से शिक्षा विधि में लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद का प्रचलन किया | साथ में भोगोन्माद, कामोन्माद को प्रोत्साहन दिया | फलस्वरूप सभी अपराधों को अर्थात पर धन, पर नारी/पर पुरुष, पर पीड़ा को वैध मान लिया | इन सब बातों को देखने पर पता लगा अवैध को वैध माना इसलिए अपराधमुक्त मानव अथवा भ्रममुक्त मानव का पहचान जीव चेतना विधि से होता ही नहीं | अपराधमुक्त, भ्रममुक्त आदमी का पहचान शिक्षा विधि से होता नहीं | इसलिए सह-अस्तित्ववादी विधि से यह प्रस्ताव रखा है कि भ्रममुक्त, अपराधमुक्त आदमी को अनुभवमूलक प्रमाण, विचारमूलक प्रमाण, व्यवहारमूलक प्रमाण में जीता हुआ, हर देश काल में पहचाना जा सकता है | इस प्रकार चेतना विकास मूल्य शिक्षा को मानव परम्परा में स्थापित करने का प्रस्ताव रखा है |

अब मानव परम्परा का आवश्यकता पर निर्भर है | मानव जात अपराधों से मुकरना सम्भव न होने की स्थिति में, इस धरती पर मानव रह नहीं पायेगा क्योंकि धरती बीमार हो चुकी है | धरती के साथ अपराध करते जाएँगे तो धरती सुधरेगा कब? यदि अपराध को अपराध मानते हैं, न्याय को न्याय मानते हैं तब न्याय को अपनाने पर यह धरती कितना सुधर सकता है | जैसा धरती बीमार होने की बात खनिज कोयला, खनिज तेल, विकिरणीय धातुओं के अपहरण एवं प्रयोग से रहा है | अपहरण से बीमार हुआ है तथा प्रयोग से बीमारी का स्रोत हुआ है और प्रदूषण छा गया है | इस घटना को ठीक करने का योग्यता मानव जाति के पास नहीं है | धरती ही अपने शेष शक्ति से जो ठीक कर पाता है उसी को देखना एकमात्र उपाय है | देखने का स्थिति तभी बनता है जब मानव उपकारी कार्यों अर्थात न्यायिक, समाधानित कार्य कलापों को अपनाएगा | इसी क्रम में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव रखा है | इसे मूलतःहिंदी भाषा में लिखा है | इसे किसी अन्य भाषा में तभी लिखा जा सकता है जब पहले हिंदी भाषा में समझा हो |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत